eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 02, July 2023

डॉ0 अम्बेडकर एवं दलित उत्थान

डॉ0 श्याम कुमार चौधरी[1]
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र महिला पी0जी0 कॉलेज, बहराइच, उ0प्र0

Received: 20 June 2023, Accepted: 28 June 2023, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2023

Abstract

यह अध्ययन डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों, संघर्षों और नीतिगत योगदानों के माध्यम से दलित उत्थान की प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। डॉ. अम्बेडकर ने भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध सशक्त वैचारिक एवं व्यावहारिक आंदोलन चलाया। उन्होंने शिक्षा, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व को सामाजिक न्याय की आधारशिला माना तथा संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से दलितों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान दिलाने का प्रयास किया। यह शोध डॉ. अम्बेडकर की भूमिका को सामाजिक सुधारक, विधिवेत्ता और संविधान निर्माता के रूप में रेखांकित करते हुए दलित चेतना, आरक्षण नीति, सामाजिक लोकतंत्र और मानवाधिकारों के संदर्भ में उनके योगदान का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द – डॉ. भीमराव अम्बेडकर, दलित उत्थान, सामाजिक न्याय, अस्पृश्यता उन्मूलन, शिक्षा, आरक्षण, मानवाधिकार

Introduction

संसार में समय–समय पर ऐसे महापुरूषों ने जन्म लिया है जो संसार की दिशा बदल डालते है। डा० अम्बेडकर उन्हीं महापुरूषों में से एक थे। डॉ० अम्बेडकर ने दलित वर्ग को शताब्दयों से चली आ रही रुढ़िवादी व्यवस्था से आजाद कराया तथा उन्हें संविधान में बराबरी का दर्जा प्रदान कराकर महत्पूर्ण कार्य किया। वे प्रखर वक्ता के साथ–साथ विचारक चिंतक भी थे। बाबा साहब ने जो कार्य किया उसे युगों–युगों तक भुलाया नहीं जा सकता।

बाबा साहब के समकालीन समाज परम्पराओं और रुढ़ियों में जकड़ा हुआ था तथा अछूतों एवं दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। उन्होनें ऐसे व्यवहार को अपने जीवन में स्वयं अनुभव किया एवं देखा। इसका प्रभाव उनके जीवन दर्शन पर भी पड़ा। अध्ययन पूरा करने के उपरान्त उन्होनें दलित समाज को ऊपर उठाने का बीड़ा उठाया। तथा हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था को हेय दृष्टि से देखने लगे। वह सोच रहे थे कि जिस समाज ने मुझे कदम–कदम पर ठोकरे मारी है, मेरा अपमान किया है क्या इस समाज को मैं ऊपर उठा सकूँगा। एक बार उन्होनें कहा था– इसमें सन्देह नहीं कि ऊँची जाति के हिन्दुओं के साथ मेरा कुछ बातो में मतभेद है, लेकिन मैं अपने मन को छोटा नहीं करूँगा। मैं लोगों को बताऊँगा कि भगवान ने सबको एक समान बनाया है। आदमी जाति से छोटा–बड़ा नहीं होता, कर्म से होता है। आदमी के अच्छे या बुरे कर्म उसके साथ जाते है। मैं हृदय खोलकर कहता हूँ कि अपने देश की रक्षा के लिए मैं अपनी जान भी गंवा दूंगा।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 02, July 2023

इसमें संदेह नहीं कि बाबा साहब का दृष्टि कोण वर्तमान राजनैतिक एवं सामाजिक संगठनो से भिन्न था तथा वे जाति जागरण हेतु अपने मार्ग का अनुसरण करना चाहते थे। वे एक राजनैतिज्ञ की भूमिका निभाने की अपेक्षा एक सामाजिक कार्यकर्ता तथा विचारक का जीवन जीना ही अधिक पसन्द करते थे। स्वतंत्र विचारक एंव लेखक ने रूप में उनका योगदान सराहनीय है। 1918 में उनका प्रथम लेख भारत में जातियां प्रकाशित हुआ जिसमें इन्होने वर्ण व्यवस्था की व्याख्या की एवं इसकी आलोचना की। महाराजा कोल्हापुर के सहयोग से दलित वर्गों के हित में मराठी साप्ताहिक मूल नायक का प्रकाशन किया तथा इसकी संपादकीय स्वयं लिखते रहे। उन्होंने ''बहिष्कृत भारत'' नामक पाक्षिक पत्र तथा साप्ताहिक ''जनता'' पक्ष का प्रकाशन किया तथा इन सभी पत्र पत्रिकाओं में दलित वर्ग की रक्षा तथा उनके हितो में लेख एंव संपादकीय लिखते रहे। इन पत्र पत्रिकाओं के अतिरिक्त अनेक पुस्तकों की रचना की। उन्होंने अपनी लेखन सामग्रियो में वर्ण व्यवस्था का विरोध किया तथा अछूत उद्वार के लिए उपाय भी बताये।

दलित हित में डा० अम्बेडकर ने अनेक कार्य किये। अपने वकालत के आरम्भिक दिनो में ही उन्हें एक केस मिला जिसमें तीन अछूत लेखकों ने एक पुस्तक में ब्राहम्ण विरोधी बाते लिखी तथा अछूत के अधिकारों पर जोर दिया। अदालत में उन्होंने पूर्ण संस्कृत साहित्य को ढोंग का पिटारा बताया और मूर्ति पूजा, कथा कीर्तन आदि सबको अपने तर्कों से ढोंग सिद्ध किया तथा सम्बन्धित निर्णय उनके पक्ष में हुआ। इस कार्य से अछूतों के अधिकार न्यायालय में भी सही साबित हुए।

एक जमीदार अपने मंदिर में अछूतों को भगवान के दर्शन नहीं करने देता था। उसे भीमराव ने अपनी तर्क संगत बातों से समझाया। जमीदार ने डा० अम्बेडकर की बातों का आदर किया। उसने गाँव के मन्दिर के द्वार सभी के लिए खोल दिये। निसंदेह अछूतों के उत्थान के लिए उस समय कई तरफ से आवाज उठायी गयी थी लेकिन उन आवाजों में अछूतों की मार्मिक पीड़ाओं से युक्त थी, यह बात अलग थी। डॉ० अम्बेडकर सामाजिक सुधार के उस दौर में एक दूसरी ही बात सोच रहे थे। सामाजिक सुधारों के प्रयत्नों से तो हिन्दू समाज का पुनरूत्थान करना था। उसमें विधवा विवाह, बाल विवाह स्त्रियों का जायदाद पर हक, नारी शिक्षा आदि समस्याएं सम्मिलित थी। डॉ० अम्बेडकर की अछूतों की पीडा, अन्याय और अपमान का व्यक्तिगत अनुभव था। वह अछूतों को दूसरों की दया पर जीवित देखना नहीं चाहते थे। उनकी समझ में नहीं आता था कि दूसरे किस प्रकार से उनकी सहायता व उत्थान में मदद कर सकते हैं।

उनका विचार था कि न्याय कभी दूसरों द्वारा स्वीकृत नहीं होता है। वे जो अन्याय, भेदभाव और इसी प्रकार के दूसरे कारणों से दुःखी व विपन्न है, उनको स्वयमेय न्याय पाने के योग्य बनना होगा। वे नहीं मानते थे कि अछूत वर्ग मात्र नारों और भाषणों के सहारे ऊपर उठ सकेगा उनका दृढ़ विश्वास था कि हिन्दू समाज में परिव्याप्त अन्धविश्वास के विरुद्ध बिना कमर कसे कुछ होने वाला नहीं है। उनका कहना था कि जो कुछ किया जाये, यह व्यावहारिक, यथार्थो–मुखी और सत्य हो।

बम्बई लेजिस्लेटिव असेम्बली ने एक बिल पास किया कि तालाब व कुंए सार्वजनिक प्रयोग के लिए है। यह भी निर्णय हुआ कि महानगरपालिका कोलाबा ने टैंक का पानी अछूतों द्वारा प्रयोग में लाया जा सकता है। किन्तु किसी में भी साहस नहीं था जो आगे बढ़े डॉ० अम्बेडकर ने घोषणा

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 02, July 2023

की दलितों का वह नेतृत्व करेंगे और स्वयं कोलाबा टैंक का पानी दलितों के लिए खोलेगें। बाबा साहब ने मन्दिर प्रवेश के लिए भी आन्दोलन चलाया।

उनका मानना था कि जाति हिन्दुओं की रीढ़ की हड्डी है। जाति ही हिन्दुओं के पतन के लिए जिम्मेदार है। जातिवाद के कारण ही हिन्दू लगातार पराजित होते रहे है। जाति के कारण ही हिन्दू को भारत का बीमार इन्सान सिद्ध कर दिया गया है उसे पुनः स्वस्थ होने के लिए अन्तजातीय विवाह जरूरी है। डा० अम्बेडकर के प्रयासों से ही वाइसराय की कौंसिल में सिक्ख, मुसलमान और हिन्दू के साथ साथ दलित को भी स्थान दिया गया। ब्रिटिश सेना में इन्हीं के प्रयास से दलितों को प्रवेश दिया गया तथा सेना में एक 'महार बटालियन' का गठन किया गया। अम्बेडकर ने अछूतों को सरकारी नौकरी में प्रवेश के लिए आयु सीमा की छूट तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने के लिए परीक्षा शुल्क में छूट की बात वाइसराय के समक्ष रखी जिसकों तत्काल स्वीकार कर लिया गया। दलितों के लिए आरक्षण का प्रावधान अम्बेडकर की ही देन है।

दलितों के हितों की रक्षा करने वाले महान विभूतियो में डॉ० अम्बेडकर का नाम ध्रुव तारे के रूप में सबसे अलग चमकता रहेगा। स्वयं जहाँ दलित समाज का मान बढ़ाया वहीं उसके अधिकार भी दिलाये। डा० अम्बेडकर के कार्यों से दलित समाज की आने वाली पीढिया हमेशा कृतज्ञ रहेगी।

सन्दर्भ सूची :–

1. राधेश्याम, भारत रत्न भीमराव अम्बेडकर, धीरज पाकेट बुक, मेरठ।
2. बाबा साहब, डॉ० अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय तीन, डॉ० श्याम सिंह, डॉ० अम्बेडकर प्रतिष्ठान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. डी० आर० मिश्र, अम्बेडकर, जीवन दर्शन, विद्या बिहार, नयी दिल्ली, 1965।
4. 'लाइफ एण्ड मिशन', डॉ० भीमराव अम्बेडकर।